ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

डॉ0 सुरेश कुमार (2025). **छायावादी कविता की अवधारणा एवं हिन्दी आलोचना : एक अध्ययन** *International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 4(3), 220-224.*

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH & REVIEWS

journal homepage: www.ijmrr.online/index.php/home

छायावादी कविता की अवधारणा एवं हिन्दी आलोचना : एक अध्ययन

डॉ0 सुरेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी, राजकीय महाविद्यालय पिहानी हरदोई (उत्तर प्रदेश)

How to Cite the Article: डॉ0 सुरेश कुमार (2025) **छायावादी कविता की अवधारणा एवं हिन्दी आलोचना : एक अध्ययन** . *International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 4(3), 220-224.*

https://doi.org/10.56815/ijmrr.v4i3.2025. 220-224

Keywords	***Abstract***
इदमित्थम्, छायावादी, स्वाभाविकता, सौंदर्यानुभूति, सुलझाना, रीतिकालीन, काव्यात्मक, गतिशीलता, प्रतिक्रिया।	हिन्दी कविता के क्षेत्र में प्रथम महायुद्ध के आस–पास एक विशेष काव्यधारा का प्रवर्तन हुआ, जिसे छायावाद की संज्ञा दी गयी है। छायावाद विशेष रूप से हिन्दी साहित्य के 'रोमांटिक उत्थान' की वह काव्यधारा है जो लगभग ई0 सन् 1918 से 1936 (उच्छवास से युगान्त) तक की प्रमुख युगवाली रही, जिसमें प्रसाद, निरालाा, पंत, महादेवी प्रमुख कवि हुए और सामान्य रूप से भावोच्छवास प्रेरित स्वच्छंद कल्पना वैभव की वह स्वच्छन्द प्रवृत्ति है। जब तक किसी प्राचीनतर सामग्री का पता नहीं चलता इसी को छायावाद का सर्वप्रथम निबन्ध कहा जा सकता है। "प्रणयवासना का यह उदगार अध्यात्मिक पर्दे में ही छिपा न रह सका। हृदय की सारी भावनाएँ इन्द्रियों के सुखविलास की मधुर और रमणीय सामग्री के बीच एक बँधी हुयी रुढ़ि पर व्यक्त होने लगी। इस प्रकार रहस्यवाद से सम्बन्ध न रखने वाली कविताएँ भी छायावादी कही जाने लगीं। अतः छायावाद शब्द का प्रयोग रहस्यवाद तक ही न रहकर काव्यशैली के सम्बन्ध में भी प्रतीकवाद के अर्थ में होने लगा।"[1]

छायावाद के पूर्व द्विवेदी युग में हिन्दी कविता कोरी उपदेश मात्र बन गयी थी। उसमें समाज सुधार की चर्चा व्यापक रूप से की जाती थी और कुछ आख्यानों का वर्णन किया जाता था। उपदेशात्मकता और नैतिकता की प्रधानता के कारण कविता में नीरसता आ गयी। कवि का हृदय उस नीरसता से उबने लगा और कविता को सरस एवं माधुर्य बनाने के लिए छटपटाने लगा। इसके लिए उसने प्रकृति को माध्यम बनाया। जब इसी प्रकृति के माध्यम से जब मानव–भावनाओं का चित्रण होने लगा तभी छायावाद का जन्म हुआ और कविता इतिवृत्तात्मकता को छोड़कर कल्पना लोक में विचरण करने लगी। मुकुटधर पाण्डेय अपने निबन्ध में कहते हैं– "छायावाद के रूप में 'हिन्दी के क्षेत्र में एक क्रान्ति हुयी थी। क्रान्ति चाहे साहित्य में हो, चाहें समाज में, उसका प्रारम्भ कैसे हुआ यह इदमित्थम् नहीं बताया जा सकता। क्रान्ति एकदम सामने आकर खड़ी नहीं हो जाती, वह धीरे–धीरे आती है। अन्तिम रूप लेने के पहले उसे कई पूर्व रूपों से गुजरना पड़ता है।"[2]

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

डॉ0 सुरेश कुमार (2025). **छायावादी कविता की अवधारणा एवं हिन्दी आलोचना : एक अध्ययन** *International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 4(3), 220-224.*

द्विवेदी युग के बाद कविता का जो स्वरूप मिलता है वह हिन्दी साहित्य के लिए नवीन तो था ही परन्तु उस दिशा में भी संकेत छायावाद–युग के पूर्व से ही मिलने लगे थे। यह संकेत मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, मुकुटधर पाण्डेय, जगमोहन सिंह, और श्रीधर पाठक में ही नहीं, कहीं–कहीं भारतेन्दु और उससे पूर्व घनानन्द से मिलते हैं। इतना होने पर भी छायावाद यदि पूर्व युगों से छिन्न मालूम होता है तो इसका एक बड़ा कारण यह भी है कि भारतेन्दु के बाद हिन्दी कविता की भाषा बदल गयी थी। यदि घनानन्द या उस समय के कवियों ने खड़ी बोली में लिखा होता तो वे सरलता से छायावाद के पूर्व पुरुष मान लिए गये होते। किन्तु ऐसा नहीं हुआ। कुछ तो कविता की भाषा बदल जाने के कारण और कुछ पाश्चात्य प्रभावों के, प्रायः सहसा पूँजीभूत हो उठने के कारण छायावादी कविता ने ऐसा रूप ले लिया जो उसे पूर्व युगों से भिन्न कर देता है। फिर भी, जो नियम अन्य भाषाओं में घटित होने वाली साहित्यिक क्रान्तियों पर लागू होते हैं, हिन्दी भाषा की साहित्यिक क्रान्तियाँ उनका सर्वथा अपवाद नहीं हैं।

द्विवेदी युग के बाद, हिन्दी में छायावाद नाम से जो आन्दोलन उठा, वह मुख्यतः द्विवेदी युगीन काव्य की कल्पनाहीनता के विरुद्ध विद्रोह था। किन्तु, उसके और भी पहलू थे। छायावाद के समान कोई आन्दोलन रीतिकाल के अंतिम चरणों में ही समय के गर्भ में आ चुका था। साहित्य में कोई युग या धारा अधिक दिनों तक नहीं ठहरती। एक शैली के बहुत समय तक प्रचलित रहने से एकरूपता आ जाती है।

''रीतिकालीन रूढ़िवाद से थके हुए कवियों ने, जब सामाजिक परिस्थितियों से प्रेरित होकर तथा बोलचाल की भाषा में अभिव्यक्ति की स्वाभाविकता और प्रचार की सुविधा समझकर ब्रजभाषा का जन्मजात अधिकार खड़ी बोली को सौंप दिया, तब साधारणतः लोग निराश ही हुए। भाषा लचीलेपन से मुक्त भी और उक्तियों में चमत्कार न मिलता था। इसके साथ रीतिकाल की प्रतिक्रिया भी कुछ कम वेगवती न थी। अतः उस युग की कविता की इतिवृत्तात्मकता इतनी स्पष्ट हो चली कि मनुष्य की सारी कोमल और सूक्ष्म भावनाएँ विद्रोह कर उठीं। इसमे संदेह नहीं कि उस समय की अधिकांश रचनाओं में भाषा लचीली न होने पर भी परिष्कृत भाव–सूक्ष्मता–रहित होने पर भी सात्विक, छन्द नवीनता शून्य होने पर भी भावानुरूप और विषय रहस्यमय न रहने पर भी लोक परिचित और संस्कृत मिलते हैं। पर स्थूल सौन्दर्य की निर्जीव आवृत्तियों से थके हुए और कविता की परम्परागत नियम–शृंखला से ऊबे हुए व्यक्तियों को, फिर उन्हीं रेखाओं में बंधे स्थूल का न तो यथार्थ चित्रण रूचिकर हुआ और न उसका रूढ़िगत आदर्श भाया। उन्हें नवीन रूपरेखाओं में सूक्ष्म सौंदर्यानुभूति की आवश्यकता थी, जो छायावाद में पूर्ण हुयी।''[3]

द्विवेदी युग के बाद हिन्दी कविता में जो नया आन्दोलन आया उसका परिचय देने के लिए छायावाद और रहस्यवाद इन दोनों नामों का उल्लेख किया जाता है। यह आंदोलन रूप और स्वभाव में, अंग्रेजी के रोमांटिक आन्दोलन के समान था और रोमांटिक कविता में रहस्यवादी तत्व रहते ही आए हैं। हिन्दी साहित्य में छायावादी आन्दोलन आकस्मिक था ? छायावाद के अग्रणी कवियों ने अपने निबंधों तथा भूमिकाओं में बार–बार यह बात कही है कि छायावाद के मूल भावों का संबन्ध उपनिषदों के भावों से है। जब यह आन्दोलन जीवित था तब अनेक बार छायावादियों ने कबीर, मीरा, रसखान, घनानन्द और बोधा का नाम लेकर यह दिखाने का प्रयास किया था कि यह आन्दोलन हिन्दी कविता के शृंगार के साथ है। किन्तु सब कुछ होने पर भी जनता का यह भ्रम बना ही रहा कि यदि बंगला में रवीन्द्रनाथ की प्रसिद्ध न हुयी तो हिन्दी में यह नया आन्दोलन नहीं आता। हिन्दी का छायावादी आन्दोलन रवीन्द्रनाथ की प्रसिद्ध से प्रेरित था या हिन्दी कविता का स्वाभाविक विकास। इस गुत्थी को सुलझाना आसान नहीं है। परिवर्तन जब मंद–मंद चलता है तब वह केवल परिवर्तन कहलाता है किन्तु जब उसकी गति तीव्र हो जाती है तो उसे क्रान्ति कहते है। रामदरश मिश्र अपनी पुस्तक 'छायावाद का रचनालोक' में छायावाद की अवधारणा को व्यक्त करते हुए कहते हैं– 'छायावाद को शाप देने वालों ने छायावाद का बड़ा मजाक उड़ाया है। उन्होंने समझा कि वह काव्य–वंश में कोई बड़ा ही विचित्र बालक पैदा हो गया है, जो पंखों वाला है, जो जन्म से ही आकाश में ताकता है, जो दूध और पानी पीने के स्थान पर आँसू पीता है, जो पैदा होते ही शून्य की, असीम की बहकी–बहकी बातें करता है और जो माँ की गोद छोड़कर पंखों पर उड़–उड़कर अनन्त में विलास कर रहा है।''[4]

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

डॉ0 सुरेश कुमार (2025). **छायावादी कविता की अवधारणा एवं हिन्दी आलोचना : एक अध्ययन** *International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 4(3), 220-224.*

अतएव यह कहना ठीक नहीं लगा कि हिन्दी में छायावाद की अवधारणा का जन्म रवीन्द्रनाथ की प्रेरणा से आया था। किन्तु, छायावाद के दो अग्रणी कवियों, निराला और पंत पर रवीन्द्रनाथ का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता हैं। यद्यपि महादेवी वर्मा और प्रसाद इस प्रभाव क्षेत्र से बाहर रह जाते है। अंततः यह कहना उचित लगता है कि नये आन्दोलन की तैयारी हिन्दी कविता के भीतर आप–ही–आप होती आ रही थी तथा प्रसाद और माखनलाल जी की रचनाओं तक वह हिन्दी की पूर्वागत धारा के समीप थी। निराला और पंत के आने के बाद कुछ रवीन्द्रिक प्रभाव भी कविता में सम्मिलित हो गया। वास्तव में देखा जाए तो कोई साहित्यिक युग अपने पूर्ववर्ती युग की नीरस प्रवृत्तियों के विरोध में ही उपजा और आगे चलकर अपनी प्रवृत्तियों के कुचक्र में फँसकर नये युग का उदय करता है। ''साहित्य में प्रत्येक युग अपने पूर्ववर्ती युग के अनुभवों से शिक्षा लेकर आगे बढ़ता है और समाप्त होते–होते आगामी युग के लिए अपने अनुभवों का निचोड़ छोड़ जाता है। एक युग से दूसरे युग का यह जो क्रिया या प्रतिक्रिया का सम्बन्ध है उसके उदाहरण अपने साहित्य में कम से कम, रीतिकाल से स्पष्ट मिलने लगते हैं।''[5]

छायावाद के पूर्व द्विवेदी युग में काव्य की जो झलक दिखायी पड़ती है वह कहीं न कहीं किसी विशेष परिस्थिति या नियमबद्धता के अधीन थीं। द्विवेदीयुग का काव्य नैतिकता से आक्रांत था। द्विवेदी युग में कविता की भाषा पर विशेष ध्यान दिया गया, जो भावुकता की अपेक्षा काव्य में भाषागत त्रुटियों को सुधारने को लेकर था। व्यापक रूप से देखा जाय तो छायावाद युग भारत की अस्मिता का युग है। द्विवेदी युग की तत्कालिक परिस्थितियों के परिणामस्वरूप ही हिन्दी जगत में छायावाद का उदय हुआ, जिस पर समय–समय विद्वानों ने पाश्चात्य संस्कृति की छाया का प्रभाव माना। छायावाद युग से पूर्व का काव्य द्विवेदीयुगीन नैतिकता के आग्रह से बोझिल था। छायावाद के उपरान्त कविता अंर्तजगत की ओर उन्मुख हुयी और उसमें सूक्ष्म, वक्र एवं सांकेतिक पदावली की प्रतिष्ठा हुयी। छायावाद ने रीतिकालीन श्रृंगार भावना के सूक्ष्म तथा स्थूल रूपों को नवीनता के साथ ग्रहण किया जबकि द्विवेदी युग में रीतिकालीन श्रृंगार भावना का विरोध किया गया।

''छायावाद एक श्रेणी के पाठकों को जिस प्रकार प्रिय है, उसी प्रकार वह दूसरी श्रेणी के पाठकों को अप्रिय भी हो सकता है। भाव, भाषा और विषयवस्तु की सुदृढ़ संगति ही साहित्य का सनातन लक्षण हैं। रचना के मर्म का आभास मात्र पाने से काम नहीं चल सकता। पाठक के चित्त पर जो भाव अंकित होता है पदों और वाक्यों से उसकी सामंजस्य–रक्षा न होने से जो विरक्ति हो सकती है, वह केवल साधारण अर्थ–बोध के आनन्द से दूर नहीं की जा सकती। बड़े–बड़े काव्यों में यह दोष उतना न खटके पर छोटी–छोटी रचनाओं के पक्ष में घातक हो सकता है। खटकने की साधुता पर ही निर्भर रहना अवश्य विराग उत्पन्न करने वाला है। अतएव 'छायावाद' के आदर्श महात्म्य को देखते हुए भी उसे एक प्रकार से 'चरमपंथी' कहने में कुछ भी संकोच नहीं होता।''[6]

छायावाद विशेष रूप से हिन्दी साहित्य के रोमांटिक उत्थान की वह काव्य धारा है जो लगभग ई0स0 1918 से 1936 तक की प्रमुख युगवाणी रही। द्विवेदी महायुग की समाप्ति के बाद सम्पूर्ण देश में एक नयी चेतना जन्म ले रही थी। देश में कई सुधार आंदोलन तथा राष्ट्रीय आंदोलनों का प्रभाव दिखायी पड़ रहा था ऐसी परिस्थिति में रचनाकारों ने द्विवेदीयुगीन कविता की इतिवृत्तात्मकता का विरोध कर छायावादी कविता करना प्रारम्भ कर दिया। ''1920 के आस–पास युग की उद्‌बुद्ध चेतना ने वाह्य अभिव्यक्ति से निराश होकर जो आत्मबद्ध अंतर्मुखी साधना आरम्भ की, वह काव्य में छायावाद के रूप में अभिव्यक्ति हुयी।'' छायावादी कविता के बारे में विभिन्न विद्वानों एवं आलोचकों का विशेष महत्त्व है जिन्होंने अपनी भाषा में छायावाद की अवधारणा स्पष्ट

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

डॉ0 सुरेश कुमार (2025). **छायावादी कविता की अवधारणा एवं हिन्दी आलोचना : एक अध्ययन** *International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 4(3), 220-224.*

की। डॉ0 नगेन्द्र कहते हैं– ''नवीन शिक्षा पद्धति, अंग्रेजी के प्रभाव और अंग्रेजी से प्रभावित बंगला–साहित्य के संपर्क ने व्यक्तिवादी भावना को जगाया, जिससे व्यक्ति का अहं उद्दीप्त हो उठा। जो कुछ भी इस उद्दीप्त अहम् के विरोध में आया, उसे अस्वीकार करने की, उसका विरोध करने की कोशिश की गयी। इसलिए एक ओर तो इस युग के काव्य में द्विवेदी युगीन नैतिकता और स्थूलता की प्रतिक्रिया दिखायी पड़ती है और दूसरी ओर विदेशी दासता के प्रति विद्रोह का स्वर सुनायी देता है।''[7]

''छायावाद शब्द का अर्थ चाहे जो हो परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से यह प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी की उन समस्त कविताओं का द्योतक है जो 1918 से 1936 ई0 के बीच लिखी गयी। नामवर सिंह लिखते हैं – ''छायावाद उस राष्ट्रीय जागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो एक ओर पुरानी रूढ़ियों से मुक्ति चाहता था और दूसरी ओर विदेशी पराधीनता से। इस जागरण में जिस तरह क्रमशः विकास होता गया, इसकी काव्यात्मक अभिव्यक्ति भी विकसित होती गयी और इसके फलस्वरूप 'छायावाद' संज्ञा का भी अर्थ विस्तार हो गया।''[8]

छायावाद द्विवेदी युगीन इतिवृत्तात्कता के विरोध में ऐतिहासिक विकास के अगले चरण के रूप में विकसित हुआ है। द्विवेदी युग ने अगले इतिहास बोध के रूप में द्योतक और प्रेरक का कार्य भी किया। छायावाद ने अपने युगबोध के अनुरूप ही हिन्दी काव्य भण्डार को समृद्धशाली बनाने में अपना अमूल्य योगदान दिया है। छायावादी काव्य की अनेकशः उपलब्धियाँ ऐतिहासिक हैं, जिससे न केवल तत्कालीन हिन्दी काव्य ही सम्पन्न और समृद्ध हुआ वरन् उससे परिवर्ती काव्यधाराओं को भी प्रेरणा मिली।

''साहित्यकार ही नहीं, चिंतक और विचारक भी अपने युग की सीमाओं के भीतर ही कार्यशील होते हैं, क्योंकि उनमें युग की चेतना ही पूंजीभूत और साकार हो उठने लगती है। कोई साहित्यकार तो अपने देश की प्राचीन संस्कृति के प्राणवान् मूल्यों का अन्वेषण कर उनका नये युग के निर्माण में प्रयोग करता है तथा कोई किसी विदेशी चिंतनधारा से प्रभावित होकर नये युग के स्वप्न तराशने लगता है। छायावाद–युग की काव्यधारा को समझने के लिए उस युग के जीवन को भी समझना होगा, और उन तत्त्वों और मूल्यों के स्रोत तथा स्वरूप पर भी प्रकाश डालना होगा, जो इस काव्यधारा के आदर्श बने।''[9]

छायावाद की समय सीमा को लेकर आलोचकों के बीच काफी मतभेद है। छायावादी कविता के पर्यवसान से पता चलता है कि छायावाद का आरम्भ 1918 ई0 में हो गया था सन् 1930 के आस–पास हिन्दी जगत में छायावादी कविताओं के भावपक्ष पर अंग्रेजी के रोमांटिक कवि, शेली, कीट्स, वड्र्सबर्थ आदि का नाम लिया जाने लगा। इस तरह से छायावाद के साथ रोमांटिसिज्म नाम भी जुड़ गया। आचार्य शुक्ल ने 'रोमांटिसिज्म' के लिए हिन्दी में 'स्वच्छंदतावाद' शब्द चलाया और वह चल भी पड़ा, किन्तु उनके 'स्वच्छदतावाद' की परिभाषा सीमित थी। वह सम्पूर्ण छायावादी कविताओं को अपने अंदर समेट न सकीं।

हिन्दी में छायावादी कविता की अवधारणा अतीत से ही भावात्मक और सांस्कृतिक संबंध के रूप में स्थापित हो गयी थी। छायावादी कविता में गतिशीलता थी। अंग्रेजी की रोमांटिक कविता से भी उसका भावात्मक और कलात्मक सम्बन्ध जुड़ गया था। छायावाद एक युग, एक दिशा और एक भाषा में आकर भी सभी युगों, सभी देशों और सभी भाषाओं से एकात्म हो गया। छायावादी कविता का अभ्युदय द्विवेदीयुगीन कविता की नैतिकता के बोझिल एवं उबाऊ प्रवृत्ति तथा इतिवृत्तात्मकता के

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

डॉ0 सुरेश कुमार (2025). **छायावादी कविता की अवधारणा एवं हिन्दी आलोचना : एक अध्ययन** *International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 4(3), 220-224.*

विरोध में हुआ था परन्तु पश्चिम के रोमांटिक कवियों का प्रभाव परवर्ती समय में कविताओं में दिखायी पड़ता है।

अतः कह सकते हैं कि छायावाद की अवधारणा भारतीय परिप्रेक्ष्य में परम्परानुमोदित थी। वह अपनी पूर्ववर्ती साहित्य युग की प्रतिक्रिया के रूप में सामने आयी तथा समकालीन कवियों और आलोचकों के साहित्यिक अवदानों से उसमें श्रीवृद्धि हुयी।

सन्दर्भ

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पेपरबैक संस्करण, संवत् 2063 विक्रमी, पृ0 सं0 354
2. हिन्दी में छायावाद, मुकुटधर पाण्डेय, तिरुपति प्रकाशन, हापुड़, प्रथम संस्करण 1984, पृ0 सं0 59
3. साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2008, पृ0 सं0 60
4. छायावाद का रचनालोक, रामदरश मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2009, पृ0 सं0 9
5. काव्य की भूमिका, रामधारी सिंह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, पहला संस्करण 1958, वर्तमान संस्करण 2013, पृ0 सं0 31
6. हिन्दी में छायावाद, मुकुटधर पाण्डेय, तिरूपति प्रकाशन, हापुड, प्रथम संस्करण, 1984, पृ0 सं0 46
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ0 नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा, प्रथम संस्करण 1973, 39वाँ संस्करण 2011, पृ0 सं0 518
8. छायावाद, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0, नई दिल्ली, पहला संस्करण 1955, नौवी आवृत्ति, 2009, पृ0 सं0 17
9. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ0 नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, मयूर पेपरबैक्स, नाएडा, प्रथम संस्करण 1973, 39वाँ संस्करण 2011, पृ0 सं0 515,16

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License